के अनुसार सभी मनुष्य इनका आचरण करें। तात्पर्य यह है कि चाहे सांसारिक परिस्थितियाँ दुःखमय हैं; परन्तु यदि सब वर्ण आश्रमों के मनुष्य इन गुणों का अभ्यास करें, तो शनैः-शनैः शुद्धसत्त्वमय अध्यात्म-साक्षात्कार के परमोच्च शिखर पर आरूढ़ हुआ जा सकता है।

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्।।४।।

दम्भः=दम्भ; **दर्पः**=गर्व; **अभिमानः**=दूसरों से सम्मान पाने की इच्छा; **च**=तथा; **क्रोधः**=क्रोध; **पारुष्यम्**=निष्ठुरता; **एव**=निःसन्देह; **च**=तथा; **अज्ञानम्**=अविवेक; **च**=तथा; **अभिजातस्य**=प्राप्त हुए पुरुष के (लक्षण हैं); **पार्थ**=हे अर्जुन; **सम्पदम्**=स्वभाव को; **आसुरीम्**=आसुरी।

अनुवाद

हे अर्जुन! पाखण्ड, गर्व, अभिमान, क्रोध, निष्ठुरता और अज्ञान—ये सब आसुरी स्वभाव वाले के लक्षण हैं।।४।।

तात्पर्य

इस श्लोक में नरक के राजपथ का वर्णन है। आसुरी स्वभाव वाले मनुष्य प्रतिकूल आचरण करते हुए भी धर्म और अध्यात्म-विद्या का पाखण्ड करना चाहते हैं। उन्हें अपनी विद्या और सम्पत्ति का बड़ा गर्व रहता है। वे चाहते हैं कि दूसरे उन्हें पूजें। यद्यपि कोई उनका सम्मान नहीं करता; पर वे सब से सम्मान की माँग करते हैं। छोटी-छोटी बात पर वे अति क्रोधित हो उठते हैं और बहुत ही कठोर वाणी बोलते हैं। वे नहीं जानते कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। उनका सम्पूर्ण व्यवहार स्वेच्छाचारमय होता है, वे किसी प्रमाण को नहीं मानते। इन सब आसुरी गुणों को वे माँ के गर्भ में ही धारण कर लेते हैं और जैसे-जैसे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे इन अमंगलमय गुणों को प्रकट करते हैं।

दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव।।५।।

दैवी=दैवी; **सम्पत्**=स्वभाव; **विमोक्षाय**=मोक्ष के लिए; **निबन्धाय**=बन्धन के लिए; **आसुरी**=आसुरी (स्वभाव); **मता**=माना गया है; **मा शुचः**=शोक न कर; **सम्पदम्**=स्वभाव को; **दैवीम्**=दिव्य; **अभिजातः असि**=तू जन्मा है; **पाण्डव**=हे अर्जुन।

अनुवाद

दैवी गुण मोक्ष करने वाले हैं और आसुरी गुण बन्धनकारी माने गए हैं। हे अर्जुन! तू शोक न कर, क्योंकि तू दैवी गुणों के साथ जन्मा है।।५।।

तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को यह कहकर आश्वासन दे रहे हैं कि वह आसुरी